टैरेस पर एक सेनानायक

प्रियंवद

टैरेस पर एक सेनानायक

प्रियंवद

प्रियंवद की कहानियां समकालीन हिंदी कहानी का एक विलक्षण कोना हैं. मानव-मन के गहरे स्तरों को छूती ये कहानियां अपने समय को अद्भुत तरीके से रचती हैं. जीवन के दुख और सौंदर्य, प्रेम और उदासी को अनूठे ही शिल्प में रचती है उनकी कथा-भाषा. एक गहरा इतिहास-बोध उनकी कथा-भूमि के पार्श्व में हमेशा मौजूद रहता है. उनके पात्र जीवंत और आवेगमय हैं, उनकी ज़िंदगियां हमारे समय और इतिहास की एक ऐसी व्याख्या करती हैं, जिसके बिना भविष्य की ओर देख पाना संभव नहीं है. ये बार-बार पढ़ी जाने वाली कहानियां हैं -- क्योंकि इनमें ज़िंदगी का समंदर सैलाब ले रहा है और एक दर्द किन्हीं वीरानों से पुकार रहा है.

किताब के बारे में...

'इन पुराने पत्थरों के बीच मुझे हमेशा दूसरे तरीके से महसूस होता है. मुझ पर जादू कर देते हैं ये. आप सोचते होंगे कि यह सब अजीब है. पर मेरे साथ ऐसा है. मैंने बहुत कुछ देखा है. ऐलोरा के कैलाश मंदिर में पांव रखते ही मेरी देह सनसना जाती है... अजंता की लेटी बुद्ध-प्रतिमा नसों का ख़ून जमा देती है. चित्तौड़ का मीरा मंदिर, राणा कुंभा के महलों के खंडहर के मंदिर के गर्भगृह... लगता है जैसे खाल को चटकाकर एक चीख़ निकलेगी. सांस लेना मुश्किल हो जाता है मेरा. मेरी नसों में रेंगने लगते हैं वे सब लोग... वह जीवन... वह दुनिया. मुझे लगता है कि मेरा ही अंश था वह... मेरा देखा हुआ सपना ही है. मुझे लगता है कि मैं ही तो थी अजंता की चित्रकार... ऐलोरा की मूर्तिकार. मैं ही तो थी गाती हुई मीरा... खजुराहों के गर्भगृहों में नृत्य करती नर्तकी और मैं ही तो थी मांडू की रूपमती...'

मैं उसकी आँखें देख रहा था. उसके अंदर से धीरे-धीरे एक दूसरी औरत फूट रही थी. अतृप्त... एकांकी और खंडित. स्वयं को निर्वसन करती हुई. अचानक मैं अंदर से कांप गया. एक ठंडी लहर, रीढ़ की हड्डी में दौड़ गई. क्या है यह सब? क्या हो रहा है? उस गीले कांपते अंधेरे में कैसी थीं वे दो आँखें. बहुत धीरे-धीरे लेकिन सलीके से कोई सुख मेरे अंदर जन्म ले रहा था. अपने पहले स्पर्श में ही वह मेरे अंदर एक फांस की तरह धंस गया था. संबंधों की जैसे एक नई धुरी बन रही थी. रहस्यमय, सुंदर और सम्मोहक. अनिश्चितता और आगत की आशंका से मैं भय से ऐंठने लगा. उन पत्थरों के बारे में बोलते हुए वह अजीब तरीके से अंदर से भर गई थी. मैं एकदम से उठ गया.

'मुझे चलना चाहिए अब.'

वह भी उठ गई 'फिर कब आएंगे आप? बातें अधूरी रह गई.'

अनुक्रम

चूहे	10
एक अपवित्र पेड़	39
बुतों के छिलके	51
टैरेस पर एक सेनानायक	84

भूमिका

इस भूमिका को लिखने का कारण यही है कि इस बहाने पुन: अपनी लिखी कहानियों से गुज़र सकूं. दूसरे अर्थों में एक लिए जा चुके जीवन को पुन: जी सकूं. यह उसी तरह है जैसे मिट्टी में सैकड़ों साल दबे रहने के बाद निकाले गए किसी शहर की संकरी गलियों. टूटी दीवारों. भग्न इमारतों के बीच, इतिहास और स्मृति के आलोक में घूमा जाए. अतीत, स्मृतियां, नौस्टेल्जिया मुझे हमेशा सहारा देते हैं. ये मेरा अनिवार्य हिस्सा हैं. इस भूमिका का महत्त्व मेरे लिए उस रूप में भी है.

इन कहानियों से पुन: गुज़रते हुए अब सबसे पहले यही महसूस होता है कि मैं एक अच्छी-खासी आयु जी चुका. पच्चीस वर्षों का कालखंड इन कहानियों में सिमटा है. कहानियों में ही पहले वाले समय की अपेक्षा बाद के समय में. जीवन को देखने की दृष्टि और जीवन को अनुभव करने व ग्रहण करने के स्तरों में धीरे-धीरे आता हुआ परिवर्तन दिखता है. पहले जैसा गहरा आवेग. स्वप्नों की ललक और कहीं भी जूझने की उत्तेजना अब नहीं है. बाद के वर्षों में या कि अब, कहानियों के लिखने का तरीका भी धीरे-धीरे बदल गया है. जटिलता और सूक्ष्मता कुछ अंशों में बढ़ी है. ऐसा संभवत: इसलिए हुआ, क्योंकि जीवन में जटिलताएं बढ़ीं और उसके गहरे, उलझाव भरे, सूक्ष्म तानों-बानो से गुज़रना हुआ. शुरुआती समय में जीवन बहुत ऊपर से ही जिया जाता है. सतह पर तैरते हुए आवेग, विचार, स्वप्न ही महत्त्वपूर्ण या कि जीवन का एकमात्र सार लगते हैं. उनका सरल प्रकटीकरण ही अक्सर कहानियों में भी आता है. बाद में, धीरे-धीरे अपने गुंजलकें खोलता हुआ जीवन बताता है कि वह कितनी गहरी, वेगवान अंर्तधाराओं का जटिल भंवर है. कहानियों में भी वह सब धीरे-धीरे उतरता है. संभवत: इसीलिए मेरी कहानियों में जटिलता भी आई है. सूक्ष्मता भी और विशिष्ट अनुभव भी. सतह पर दिखने वाले सरल भावावेगों और संवेदनाओं की जगह, अंतर्जगत की अंधेरी गुफाओं में दुबके चमगादड़ों की तरह उलटी लटकी। पर शक्तिशाली भावनाओं को टटोलने का प्रयास बढ़ा है. कहानियों में प्रयोग करने की, बात को नए तरीके से कहने की कोशिशें बढ़ी है. सीधी-सीधी, एक निश्चित आदि, मध्य व अंत वाली कथा, कुछ पात्र, कुछ घटनाएं अब कहानी के पुराने और अप्रासंगिक तत्व लगने लगे हैं, और जो संभवत: हो भी गए है. रचनात्मक स्तर पर कहानी

के ढांचे के साथ प्रयोग करने की, फार्म से जूझने की कोशिशें बढ़ी हैं. परिश्रम और अध्ययन पर विश्वास इधर बहुत बढ़ा है. पहले कोई भी क्षणिक आवेग या किसी घटना की तात्कालिक प्रतिक्रिया कहानी बन जाती थी, पर अब ऐसा नहीं है. मैं जान गया हूं कि धीरे-धीरे आयु का गुज़रना और जीवन में उससे प्रसूत परिवर्तनों का आना, इन कहानियों से बेहतर किसी और क्षेत्र में न तो दिखेगा न पकड़ में आएगा. इस भूमिका ने मुझे अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण पड़ावों और बदलावों को समझने का एक दुर्लभ अवसर दिया है.

मेरी पहली कहानी 'बोसीदनी' 1980 में 'सारिका' की कथा प्रतियोगिता में तीसरे स्थान पर पुरस्कृत हुई थी. उस प्रतियोगिता में लगभग 1000 कहानियां आई थीं. संजीव की 'अपराध' को पहला पुरस्कर मिला था. दूसरा पुरस्कार किसे मिला था, मुझे याद नहीं. वह लेखक संभवत: हिंदी में गुम हो गया. सन् अस्सी में 'सारिका' में पहली कहानी ही पुरस्कृत होना और छपना एक बड़ी घटना थी. मेरी दूसरी कहानी भारतीयों के संपादन में 'धर्मयुग में छपी. तीसरी कहानी फिर 'सारिका' में आई. एक या शायद दो साल के अंदर, किसी नए लेखक की पहली तीन कहानियां उस समय की 'सारिका' और 'धर्मयुग' में छप जाएं यह उसका दिमाग ख़राब करने के लिए काफी था. यही हुआ भी. मुझे लगने लगा कि बस मैं अब लेखक बन चुका हूं. अब बचा ही क्या है, जो भी लिखूंगा, वही 'महान' है और छप तो जाएगा ही. पाठकों के निरंतर मिलने वाले पत्रों ने इस मुगालते को और बढ़ाया. उसके बाद मैंने चौथी कहानी लिखी. वह हर जगह से लौटी. मुझे आज तक उसका नाम याद है, 'अन्ना की खिड़की.' उसके बाद एक और लिखी, वह भी लौटी. दोनों कहानियां पूरी तरह खारिज की जा चुकी थीं. मैं हतप्रभ परास्त और निराश था.

उन्हीं दिनों की बात है. एक शाम, मैं अपने पूरी तरह हिल चुके आत्मविश्वास को समेटे, कमरे में उदास बैठा था. मेरी माँ सामने बैठी थी. वह शायद कई दिनों से मेरी उदासी. मेरी परेशानी देख रही थी. उसने पूछा 'क्या बात है?' मैं माँ से कहानियों की बात नहीं करता था. पर मैंने उस दिन बता दिया कि कहानियां लिखता हूं तो अब लौट आती है. मुझे आज तक याद है. उस अनपढ़ महिला ने सिर्फ़ एक वाक्य कहा, 'तुम्हें घमंड हो गया है.' मैंने सुना और उसी क्षण मेरी समझ में पूरी बात आ गई. यही और सिर्फ़ यही सच था. अहंकार है क्या? अहंकार का अर्थ है लापरवाही परिश्रम न करना, अपनी क्षमताओं पर संशय न होना, नया सीखने को तत्पर न होना. अत्यंत